



**Original Article**

**21वीं सदी के हिंदी साहित्य तथा सिनेमा में चित्रित युवकों की समस्याएं**

**पाटील निधी संतोष**

एम.ए. भाग 2

सदगुरु गाडगे महाराज कॉलेज, कराड

Manuscript ID:

IJAAR-C130375

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 390 - 395

Submitted: 07 Feb. 2026

Revised: 16 Feb. 2026

Accepted: 20 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

पाटील निधी संतोष

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22787374

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22787374>



Creative Commons



**सार:**

21 वीं सदी गतिशील सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी बदलावों की सदी है। इन बदलावों का प्रभाव सर्वाधिक युवकों पर पड़ता हुआ दिखाई देता है। शिक्षा, रोजगार, पहचान, मानसिक संतुलन, मानसिक तनाव, पारिवारिक अपेक्षाएँ, प्रेम-संबंध और सामाजिक असमानता जैसी अनेक समस्याओं के कारण युवकों का जीवन अत्यंत जटिल हो गया है।

हिंदी साहित्य और सिनेमा ने इन समस्याओं का संवेदनशील और यथार्थपरक चित्रण किया है। प्रस्तुत शोधलेख में 21 वीं सदी के हिंदी साहित्य तथा सिनेमा में चित्रित युवकों की समस्याओं को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है। साथ ही समकालीन रचनाओं और सिनेमा में युवकों के संघर्ष, द्वंद्व और आकांक्षाओं को किस प्रकार अभिव्यक्त किया गया है, यह भी संक्षेप में स्पष्ट किया गया है।

**मुख्य शब्द:** 21वीं सदी, हिंदी साहित्य, हिंदी सिनेमा, युवक, बेरोजगारी, पहचान संकट, मानसिक तनाव, सामाजिक दबाव

**Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)**

*This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*

**How to cite this article:**

पाटील निधी संतोष. (2026). 21वीं सदी के हिंदी साहित्य तथा सिनेमा में चित्रित युवकों की समस्याएं. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 390 - 395. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22787374>

**प्रस्तावना:**

21वीं सदी के हिंदी साहित्य और सिनेमा में युवकों की प्रस्तुति एक सजीव और परिवर्तनशील स्वरूप में दिखाई देती है। यह प्रस्तुति समकालीन समाज की चुनौतियों, तकनीकी

प्रगति तथा सांस्कृतिक परिवर्तनों को स्पष्ट रूप से दर्शाती है। आज का युवक केवल नायक के रूप में ही नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और भावनात्मक संघर्षों से जूझते हुए एक संवेदनशील पात्र के रूप में प्रस्तुत हुआ है। बदलते समय के



साथ युवकों की सोच, जीवन-शैली और अपेक्षाओं में भी निरंतर परिवर्तन दिखाई देता है।

साहित्य दुनिया की प्राचीन और महत्वपूर्ण कला है, जो मानव जीवन और समाज की वास्तविकताओं को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करती आई है। इसके विपरीत सिनेमा आधुनिक युग की प्रभावशाली कला है, जो दृश्य और ध्वनि के माध्यम से समाज को प्रभावित करता है। 21वीं सदी में साहित्य और सिनेमा दोनों माध्यमों के बीच एक-दूसरे से गहरा संबंध दिखाई देता है। कई बार साहित्यिक रचनाएँ सिनेमा का आधार बनती हैं, तो कई बार सिनेमा समाज की वास्तविकताओं को साहित्य की तरह प्रस्तुत करता है।

इन दोनों माध्यमों में युवकों की सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, ऐतिहासिक, धार्मिक तथा नैतिक समस्याओं को प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया गया है। शिक्षा, रोजगार, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, सामाजिक असमानता, परंपरा और आधुनिकता के बीच का संघर्ष युवकों के जीवन को जटिल बनाता है, जिसका यथार्थ चित्रण साहित्य और सिनेमा दोनों में देखने को मिलता है।

हिंदी साहित्य और सिनेमा के माध्यम से युवा पीढ़ी की आकांक्षाओं, असमानताओं और आधुनिकता के साथ होने वाले संघर्ष को प्रभावी रूप से उजागर किया गया है। ये माध्यम युवकों की आवाज़ को समाज की मुख्यधारा तक पहुँचाने का कार्य करते हैं तथा समाज को उनके प्रति जागरूक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

प्रस्तुत शोधलेख में 21वीं सदी के हिंदी साहित्य तथा सिनेमा में युवकों की प्रस्तुति और उनकी समस्याओं का विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि समकालीन साहित्यिक

रचनाएँ और फिल्में किस प्रकार युवकों की, समस्याओं और आकांक्षाओं को अभिव्यक्त करती हैं।

### हिंदी साहित्य का परिचय:

हिन्दी भारत और विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। उसकी जड़ें प्राचीन भारत की संस्कृत भाषा तक जाती हैं परन्तु मध्ययुगीन भारत के अवधी, मागधी, अर्धमागधी तथा मारवाड़ी जैसी भाषाओं के साहित्य को हिन्दी का आरम्भिक साहित्य माना जाता है। हिन्दी साहित्य ने अपनी शुरुआत लोकभाषा कविता के माध्यम से की और गद्य का विकास बहुत बाद में हुआ। हिन्दी का आरम्भिक साहित्य अपभ्रंश में मिलता है। हिन्दी में तीन प्रकार का साहित्य मिलता है- गद्य, पद्य और चम्पू। जो गद्य और पद्य दोनों में हो उसे चम्पू कहते हैं। खड़ी बोली की पहली रचना कौन सी है, इस विषय में विवाद है लेकिन अधिकांश साहित्यकार लाला श्रीनिवासदास द्वारा लिखे गए, उपन्यास परीक्षा गुरु को हिन्दी की पहली गद्य रचना मानते हैं।

### सिनेमा का परिचय:

हिन्दी सिनेमा, जिसे बॉलीवुड के नाम से भी जाना जाता है, हिन्दी भाषा में चलचित्र (फ़िल्म) बनाने का उद्योग है। बॉलीवुड नाम अंग्रेज़ी सिनेमा उद्योग हॉलीवुड के तर्ज़ पर रखा गया है। हिन्दी चलचित्र उद्योग मुख्यतः मुम्बई शहर में बसा है। ये चलचित्र हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और विश्व के कई देशों के लोगों के हृदयों की धड़कन हैं। अधिकतर चलचित्रों में कई संगीतमय गाने होते हैं। इन चलचित्रों में हिन्दी की "हिन्दुस्तानी" शैली का चलन है। हिन्दी और उर्दू (खड़ीबोली) के साथ साथ अवधी, बम्बइया हिन्दी, पंजाबी जैसी भाषाओं का भी संवाद और गानों में उपयुक्त होते हैं। आजकल हिन्दी/उर्दू और अंग्रेज़ी



का मिश्रण, यानी हिंग्लिश/उर्दू, भी अधिक आम हो गया है। प्यार, देशभक्ति, परिवार, अपराध, भय, इत्यादि मुख्य विषय होते हैं। ज्यादातर गाने उर्दू शायरी पर आधारित होते हैं। भारत में सबसे बड़ी चलचित्र निर्माताओं में से एक, शुद्ध बॉक्स ऑफिस राजस्व का ४३% का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि तमिल और तेलुगू सिनेमा ३६% का प्रतिनिधित्व करते हैं, क्षेत्रीय सिनेमा के बाकी २०१४ के रूप में २१% का गठन है। बॉलीवुड विश्व में चलचित्र निर्माण के सबसे बड़े केन्द्रों में से एक है। बॉलीवुड कार्यरत लोगों की संख्या और निर्मित चलचित्रों की संख्या के मामले में दुनिया में सबसे बड़ी चलचित्र उद्योगों में से एक है।

### हिंदी साहित्य और सिनेमा का अंतः संबंध:

साहित्य दुनिया की सबसे प्राचीन कला है और सिनेमा आधुनिक युग की एक प्रभावशाली कला है। साहित्य मानव जीवन के अनुभवों, भावनाओं और समाज की सच्चाइयों को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करता है। वहीं सिनेमा उन्हीं भावों और समस्याओं को दृश्य और ध्वनि के माध्यम से प्रस्तुत करता है, जिससे उनका प्रभाव और अधिक गहरा हो जाता है। हिंदी साहित्य और सिनेमा का संबंध गहरा और जटिल है। दोनों ही समाज के दर्पण हैं और समाज की समस्याओं, संवेदनाओं तथा सांस्कृतिक मूल्यों को सामने लाते हैं।

सिनेमा और साहित्य का आपसी संबंध कई रूपों में दिखाई देता है। अनेक साहित्यिक कृतियों पर आधारित फिल्में बनी हैं, जिससे साहित्य की विचारधारा अधिक लोगों तक पहुँची है। इसके साथ ही कई बार फिल्मों ने समाज के ऐसे विषयों को उजागर किया है, जिन पर बाद में साहित्य में भी लेखन हुआ। इस प्रकार साहित्य और सिनेमा दोनों एक-दूसरे

को प्रभावित करते हुए समाज को नई दिशा देने का कार्य करते हैं।

वर्तमान समय में सिनेमा समाज को सबसे अधिक प्रभावित करने वाला माध्यम बन गया है। इसका प्रभाव विशेष रूप से युवाओं पर अधिक देखा जा सकता है। युवा वर्ग फिल्मों के पात्रों, संवादों और कथानकों से प्रभावित होकर अपने विचार और दृष्टिकोण का निर्माण करता है। वहीं साहित्य युवाओं को गहराई से सोचने, आत्ममंथन करने और जीवन मूल्यों को समझने की प्रेरणा देता है। इस प्रकार साहित्य और सिनेमा दोनों मिलकर युवा चेतना के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

साहित्य और सिनेमा मानव जीवन की आवश्यकताएँ बन चुके हैं। इनके बिना जीवन नीरस और अधूरा प्रतीत होता है। साहित्य से हमें जीवन के मूल्य, नैतिकता, संघर्ष और संवेदनशीलता का बोध होता है, जबकि सिनेमा मनोरंजन के साथ-साथ सामाजिक संदेश भी देता है। दोनों माध्यम समाज में परिवर्तन लाने की शक्ति रखते हैं। समय-समय पर साहित्य और सिनेमा ने सामाजिक कुरीतियों, अन्याय, शोषण और असमानता के विरुद्ध आवाज़ उठाने के लिए लोगों को प्रेरित किया है।

अतः यह कहा जा सकता है कि साहित्य और सिनेमा केवल मनोरंजन के साधन नहीं हैं, बल्कि वे समाज को दिशा देने वाले सशक्त माध्यम हैं। 21वीं सदी में इन दोनों का महत्व और भी बढ़ गया है, क्योंकि ये बदलते सामाजिक यथार्थ को समझने और व्यक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।



## 21 वीं सदी के हिंदी साहित्य और सिनेमा में चित्रित युवकों की समस्याएं:

साहित्य समाज का एक अभिन्न अंग है। हर लेखक जो कुछ भी रचना करता है—कथा, उपन्यास, जीवनी, आत्मकथा, यात्रा साहित्य, संस्मरण आदि—उसमें युवकों की समस्याओं, उनके संघर्ष और जीवन से जुड़े अनुभवों का चित्रण होता है। इसी तरह, सिनेमा आधुनिक कला का एक प्रभावशाली माध्यम है, जो दृश्य और ध्वनि के माध्यम से समाज, युवाओं के जीवन और उनकी समस्याओं को बड़े स्तर पर प्रस्तुत करता है। इसलिए नीचे दिए गए साहित्य और सिनेमा में युवकों की समस्याओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

**1. शिक्षा का दबाव:** आज के युवाओं पर शिक्षा और प्रतियोगिता का बहुत दबाव है। परीक्षा में अच्छे अंक लाने, परिवार की अपेक्षाओं को पूरा करने और भविष्य की चिंता करने के कारण युवा दिन-रात पढ़ाई में लगे रहते हैं। इसके चलते उनमें मानसिक तनाव और चिंता बढ़ जाती है। हिंदी साहित्य में कई लेखकों ने और सिनेमा में डायरेक्टर ने इसी समस्या को अलग-अलग जरिए से प्रस्तुत किया है।

★ साहित्यिक रचना- ममता कलिया की कथा लड़कियां, प्रदिप सौरभ जी का उपन्यास और सिर्फ तितली।

★ सिनेमा- तारे जमीन पर, 3 इडिएट्स

**2. बेरोजगारी:** बेरोजगारी समाज की गंभीर समस्या है, जिससे युवाओं के जीवन में असंतोष, तनाव और अस्थिरता होती है। मध्यवर्गीय शिक्षित युवा वर्ग इस दबाव का सबसे अधिक सामना करता है। इस समस्या को कई साहित्यकारों और पटकथाकारों ने अपने-अपने अंदाज में साहित्य और सिनेमा के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

★ साहित्यिक रचनाएं- सूर्यबाला कथा साहित्य अग्निपंखी, दिशाहीन, मुंडेर पर, रेणु व्यास-बेरोजगार युवा में मानस-प्रवेश,

तथा हरे प्रकाश उपाध्याय ने अपने उपन्यास में बेरोजगारी का मार्मिक आख्यान।

★ सिनेमा- छिछोरे, गल्ली बॉय।

**3. मानसिक तनाव और चिंता:** आज के युवाओं पर शिक्षा, रोजगार, परिवार, विवाह, समाज की अपेक्षाएँ और आर्थिक परेशानियों के कारण मानसिक तनाव और चिंता बढ़ गई है। यह तनाव कई बार युवाओं के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर भी असर डालता है।

साहित्य और सिनेमा में लेखक डायरेक्टर ने इसी मानवीय समस्या को अपने-अपने अंदाज में प्रस्तुत किया है। वे दिखाते हैं कि किस प्रकार युवा अपने जीवन की चुनौतियों, अपेक्षाओं और दबावों के कारण मानसिक रूप से संघर्ष करते हैं।

★ साहित्यिक रचनाएं-दिल्ली ऊंचा सुनती है-कुसुमकुमार, अंतिमसाक्ष्य-चंद्रकांता, प्रदिप सौरभ और सिर्फ तितली आदि

★ सिनेमा-सैयारा,

**4. प्रेम और रिश्तों की मुश्किलें:** युवाओं को अपने पसंद के साथी चुनने में कई बार समाज या परिवार की रोक-टोक का सामना करना पड़ता है। प्यार और दोस्ती में उनके फैसले अक्सर चुनौतियों से भरे होते हैं। कभी-कभी यह तनाव इतना बढ़ जाता है कि कुछ युवा अपनी जान तक गंवा बैठते हैं। प्यार में धोखा, टूटते रिश्ते, और आत्म-संदेह जैसी समस्याएँ लेखक ने अपने साहित्य में और डायरेक्टर ने अपने सिनेमा में अपने-अपने तरीके से प्रस्तुत की हैं। इस तरह, साहित्य और सिनेमा युवाओं की भावनाओं और कठिनाइयों को दर्शाने का महत्वपूर्ण माध्यम बन जाते हैं।

★ साहित्यिक रचना- डॉ. धर्मवीर भारती के उपन्यास, जायसी की पद्मावत रचना, बाणभट्ट की आत्मकथाएं, दहलीज



★सिनेमा- एक दिवाने की दिवानियत, सैयारा, कबीर सिंह

**5. नशा और युवाओं की समस्या:** आज के युवाओं में नशे (शराब, तंबाकू, धूम्रपान, मादक पदार्थ) की समस्या बढ़ती जा रही है। नौकरी, पढ़ाई, परिवार या समाज के दबाव के कारण कुछ युवा मानसिक तनाव से बचने के लिए नशे की ओर आकर्षित होते हैं। यह समस्या उनके स्वास्थ्य, मनोबल और सामाजिक जीवन को प्रभावित करती है। इसी मानवीय समस्या को दिखाने का काम लेखक और डायरेक्टर अपने अपने अंदाज में करते हैं

★साहित्यिक रचनाएं-कफन, हरिवंशराय बच्चन जी के साहित्य, काला पत्थर

★सिनेमा-कबीर सिंह, उड़ता पंजाब, अंतिम साक्ष्य

**6. परिवार और समाज का दबाव:** युवाओं को परिवार और समाज के नियमों का पालन करना पड़ता है। कभी-कभी उनका खुद का मन और परिवार की उम्मीदें टकरा जाती हैं। यह तनाव उनके निर्णय और जीवन को प्रभावित करता है। साहित्य और सिनेमा में लेखक डायरेक्टर ने इसी मानवीय समस्या को अपने-अपने अंदाज में प्रस्तुत किया है।

★साहित्यिक रचनाएं- काला पत्थर-सुरेश शुक्ल

★सिनेमा- कभी खुशी कभी गम, कबीर सिंह, दमदार खिलाड़ी

**7. असुरक्षा:** आज के युवा कई तरह की असुरक्षा और अत्याचार का सामना करते हैं। असुरक्षा उनके भविष्य, करियर, पढ़ाई, रिश्तों और सामाजिक पहचान से जुड़ी होती है। वे अक्सर सोचते हैं कि वे समाज या परिवार की उम्मीदों पर खरे नहीं उतरेंगे। इससे उनमें तनाव, डर और आत्म-संदेह पैदा होता है।

इसके साथ ही, कुछ युवा समाज या परिवार में अत्याचार और अन्याय का भी सामना करते हैं। यह अत्याचार

कई रूपों में हो सकता है – जैसे नौकरी या पढ़ाई में भेदभाव, समाज में अन्याय, दबाव, या घरेलू हिंसा, कामकाज में भेदभाव, शिक्षा और अवसर में रोक, या अपराध, शोषण, व्यक्तिगत जीवन में उत्पीड़न। अत्याचार से युवा मानसिक रूप से दब जाते हैं और उनका आत्मविश्वास कम हो जाता है। और इसी बात को दिखाने की कोशिश लेखक और डायरेक्टर अपने साहित्य सिनेमा में करता है।

★साहित्यिक रचना- अंतिम साक्ष्य, माटी की मूरते, काला पत्थर

★सिनेमा-छपाक, ओम शांति ओम, कठपुतली, रक्षाबंधन, कबीर सिंह

#### निष्कर्ष:

21वीं सदी के हिंदी साहित्य और सिनेमा ने युवाओं की समस्याओं को बहुत ही सजीव और यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। शिक्षा का दबाव, बेरोजगारी, मानसिक तनाव, प्रेम और रिश्तों की मुश्किलें, परिवार और समाज का दबाव, असुरक्षा और अत्याचार जैसी समस्याएँ आज के युवाओं के जीवन को जटिल बनाती हैं। साहित्य और सिनेमा दोनों ने इन मुद्दों को अलग-अलग अंदाज में दिखाया है, जिससे समाज और पाठक/दर्शक युवाओं की भावनाओं और संघर्ष को समझ सके। ये माध्यम युवाओं की आवाज़ को सामने लाते हैं और समाज को जागरूक करने में मदद करते हैं। इस प्रकार, साहित्य और सिनेमा केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि युवा जीवन की वास्तविकताओं को दर्शाने वाले महत्वपूर्ण साधन हैं।

#### संदर्भ सूची:

1. कुमार कुसुम- दिल्ली ऊंचा सुनती है, सरस्वती विह प्रकाशन, दिल्ली १९८७



2. चंद्रकांता- अन्तिम साक्ष्य, चिंतन प्रकाशन कानपुर २०१५
3. सिंह महेश- इक्कीसवीं सदी का भारतीय सिनेमा, चिंतन प्रकाशन कानपुर, २०२४
4. रिजवी इकबाल- कुछ बातें सिनेमा की, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र प्रकाशन नई, दिल्ली २०२३
5. सौरभ प्रदिप- और सिर्फ तितली, वाणी प्रकाशन नई, दिल्ली २०१५
6. बेनीपुरी रामवृक्ष- माटी की मूर्तें, ज्ञान गंगा, प्रकाशन नई, दिल्ली २०२२
7. शुक्ल सुरेश- काला पत्थर, अमन प्रकाशन नई दिल्ली

**लिंक:**

1. <https://www.drishtilas.com>
2. <https://www.youtube.com>
3. <https://chatgpt.com>